नव विश्व व्यवस्था
New World Order

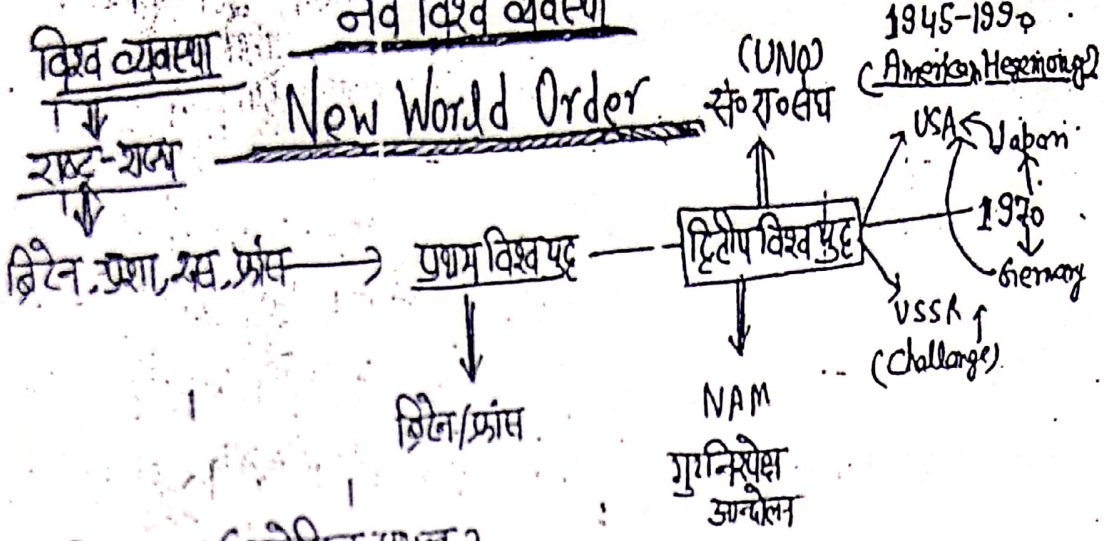

American Dominance (अमेरिकन प्रभुत्व)

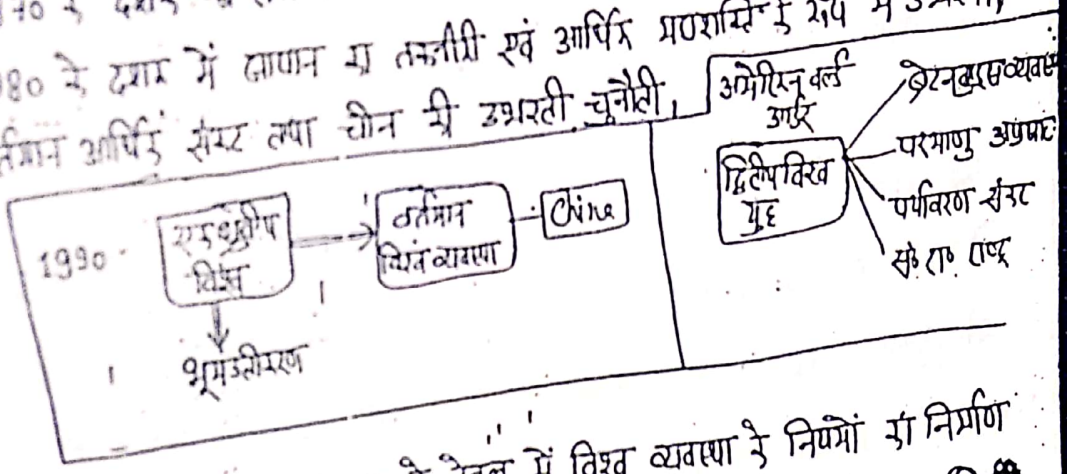

फरीद जकारिया के अनुसार USA के लिए द्वितीय विश्व के बाद 4 मौकों पर चुनौती प्रस्तुत की गयी –

(1) USSR द्वारा 1957 में स्पूतनिक छोड़ना।
(2) 1970 के दशक का तेल संकट, जिससे अमेरिकी अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई,
(3) 1980 के दशक में जापान का तकनीकी एवं आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरना,
(4) वर्तमान आर्थिक संकट तथा चीन की उभरती चुनौती,

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात USA के नेतृत्व में विश्व व्यवस्था के नियमों का निर्माण किया गया तथा USA ने पूरे विश्व में शांति एवं विश्व व्यवस्था बनाये रखने का दायित्व लिया, इसे ही PAX'AMERICANA कहा जाता है, USA ने अपनी पृथकतावादी नीति का परित्याग करते हुए द्वितीय विश्व युद्ध को समाप्त करने में निर्णायक भूमिका का निर्वाह किया तथा 1941 के 'अटलांटिक चार्टर' के माध्यम से, 1945 के 'सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन' के USA ने सर्वव्यापी शांतिपूर्ण लोकतान्त्रिक व्यवस्था के निर्माण पर बल दिया। शीतयुद्ध में साम्यवादी चुनौती के बावजूद USA ने विश्व आर्थिक प्रणाली के नियमों का
।

निर्माण ब्रैटनवुड्स सम्मेलन (1944) के द्वारा किया, इसी सम्मेलन के द्वारा IMF, IBRD तथा GATT जैसी संस्थाओं का निर्माण किया गया, जिनके द्वारा विश्व आर्थिक प्रणाली का प्रबन्ध किया गया।

PAX AMERICANA की कल्पना प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात USA राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने प्रस्तुत की तथा विल्सन ने अपने 14 सूत्रों के माध्यम से समूचे विश्व में शांतिपूर्ण सह अस्तित्व आत्मनिर्धारण के अधिकार तथा ऐसे विश्व के निर्माण पर बल दिया जिसमें भविष्य में युद्ध नहीं है। अतः PAX AMERICANA की संकल्पना अमेरिकी प्रभुत्व का प्रतीक है, आलोचकों के अनुसार PAX AMERICANA का अभिप्राय, जो अमेरिका के लिए अच्छा है, वह पूरी दुनिया के लिए अच्छा है, पर कैसे संभव है। व्यावहारिक रूप में IInd World War के पश्चात PAX BRITANICA का स्थान PAX AMERICANA ने ले लिया।

1991 में USSR के नाटकीय पतन (विघटन) के पश्चात एकध्रुवीय विश्व का उद्भव हुआ तथा अमेरिकी विचारकों ने USSR के पतन को उदारवादी लोकतन्त्र की विजय स्वीकार किया तथा 'ब्रिजानस्की' के अनुसार USA की इस विजय की तुलना 1918 में साम्राज्यवादी जर्मनी की पराजय तथा 1945 में नाजीवादी जर्मनी की पराजय तथा 1815 में नेपोलियन की पराजय के समान है इसी परिप्रेक्ष्य में 11 सितम्बर 1990 में जार्ज बुश सीनियर ने। नव विश्व व्यवस्था New World Order का नारा दिया तथा अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश Sr ने दोनों सदनों को सम्बोधित करते हुए नवीन अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के 5 नियमों को प्रतिपादित किया, जो निम्नलिखित है

(1) विश्व को आतंक से मुक्त करना

(2) न्याय, सुरक्षा एवं शांति की स्थापना

(3) पूरब एवं पश्चिम के मध्य समन्वय एवं सहयोग,
(4) विकासशील एवं विकसित देशों के मध्य सहयोग,
(5) नयी विश्व व्यवस्था में UNO को शक्तिशाली बनाना.

व्यावहारिक रूप में अमेरिका ने नयी विश्व व्यवस्था के नाम पर अमेरिकी प्रभुत्व को बनाये रखने का प्रयत्न किया तथा UNO को शक्तिशाली करने के बजाय कमजोर किया गया, USA ने वैश्विक मामलों पर एकतरफा निर्णय लिया गया तथा UNO का अपने हितों के साधन के लिए प्रयोग किया जिसके निम्नलिखित उदाहरण हैं—

(1) USA ने प्रक्षेपास्त्र विरोधी संधि ABM 1972 से स्वयं को अलग कर लिया
(2) USA ने ईराक तथा यूगोस्लाविया के मुद्दे पर UNO की अवहेलना करते हुए आक्रमण किया
(3) USA ने CTBT को अस्वीकृत कर दिया
(4) USA ने क्योटो प्रोटोकाल पर अभी भी हस्ताक्षर नहीं किया है।

'नॉम चोम्स्की' के अनुसार नयी अन्त० विश्व व्यवस्था के नाम पर पूरे विश्व में USA द्वारा अपना प्रभुत्व कायम किया जा रहा है तथा USA के नेतृत्व में व्यापारियों एवं MNCs को बढ़ावा दिया जा रहा है, आलोचकों के अनुसार इस विश्व व्यवस्था में नया क्या है? तथा दूसरे मत के अनुसार यह व्यवस्था है या अव्यवस्था

महाशक्तियों का उत्थान एवं क्षरण

'नील फर्ग्यूसन' ने पाश्चात्य विश्व के क्षरण की कल्पना प्रस्तुत की. पॉल केनेडी ने भी महाशक्तियों के उत्थान एवं पतन का व्यापक उल्लेख किया है, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से 20 वीं शताब्दी के आरम्भिक दशक में 'जर्मनी' की उभरती शक्ति को नियंत्रित करने के लिए फ्रांस, रूस तथा इंग्लैण्ड ने एक गठबंधन का निर्माण किया था 20 वीं शताब्दी में शक्तियों का पतन अलग एवं शांतिपूर्ण रूप में हुआ तथा

Scanned with CamScanner

Britain जैसी महाशक्ति के बजाय USA का प्रभुत्व विश्व में शांतिपूर्ण रूप में स्थापित हुआ. युद्ध के दृश्य नहीं तथा ब्रिटेन USA का सहयोगी राष्ट्र बन गया. द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अमेरिकी प्रभुत्व को USSR ने सैन्य रूप से चुनौती दी परन्तु USSR आर्थिक रूप में USA की बराबरी नहीं कर सका।

'नील फर्गुसन' के अनुसार यदि Britain प्रथम विश्व युद्ध में आगीदार न होता तो शायद वह एक महाशक्ति का दर्जा बनाये रखता। इसी बिंदु को स्पष्ट करते हुए पॉल केनेडी ने कहा कि Britain के कमजोर होने का मूल कारण उसका अतिसाम्राज्यवादी विस्तार (Imprehal Overstretch) था जिसको बनाये रखना उसके लिए असम्भव था। 1870 के दशक से USA ने औद्योगिक रूप में Britain की बराबरी कर ली। 1880 के पश्चात USA Britain से ज्यादा शक्तिशाली हो गया। तथा प्रथम विश्वयुद्ध के समय तक USA की अर्थव्यवस्था ब्रिटिश अर्थव्यवस्था की दुगुनी हो गयी जबकि ब्रिटेन प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात एक कर्जदार देश के रूप में उभरा तथा प्रथम विश्व युद्ध की कीमत उसने 40 बिलियन डालर के रूप में अदा की। फरीद जकारिया के अनुसार Britain का पतन अर्थव्यवस्था के कुप्रबंधन के कारण हुआ तो मूल प्रश्न उत्पन्न होता है Britain की भांति USA का प्रभुत्व भी समाप्त हो जायेगा।

Scanned with CamScanner